राम-मार

शायद ही ऐसा कोई भारतीय होगा जिसने राम का नाम नहीं सुना होगा। यदि नहीं सुना हो या याद नहीं रहा हो जैसे कि, वाल्मीकि जी को याद नहीं रहा शुरू में—

उल्टा नाम जपत जग जाना।
वाल्मीकि भये ब्रह्म समाना।।

यदि वाल्मीकि जी तर सकते हैं तो हम क्यों नहीं तर सकते हैं? राम-नाम की महिमा इतनी अपार है व इतना अधिक कहा जा चुका है कि अब कुछ कहने को बाकी नहीं रहा है। बस एक बात मेरे मन में समा गई है कि उल्टा जपने से जब इतना अधिक लाभ हुआ तो सीधा जपने से कितना अधिक लाभ होगा और यदि हम उन गुणों पर विचार व आचरण करने लगें तो अत्यधिक लाभ होना निश्चित है। कुछ लोग यह भी मानते हैं कि इन पर विश्वास करने व चलने से क्या लाभ, क्योंकि ये तो पुराने जमाने की बातें हैं। पर यदि हम, जो इस पृथ्वी पर अब आएं हैं राम की महिमा गाने व चर्चा करने में ही लगे रहेंगे तो हमारा उद्धार नहीं हो सकता है।

अब आजकल तो अंग्रेजी का जमाना है जो हमें बहुत ही कम आती है पर फिर भी ABCD.... तो पढ़ ही सकते हैं। इस बारे में मेरा एक अनुभव है कि आजकल लोग हिन्दी में अपने नाम का संक्षिप्त रूप अंग्रेजी में लिखना पसन्द करते हैं, जैसे राम मनोहर लोहिया को आर0एम0 लोहिया। अरे भाई रा0म0 लोहिया लिख दो तो दो अक्षर की जगह बचती है वरना पूरा नाम लिखने में दो अक्षर अधिक, बस तो पूरा नाम ही क्यों न लिखा जाय? यहाँ मैं श्री राम मनोहर लोहिया जी की बात नहीं कर रहा, उनका नाम सिर्फ उदाहरण के तौर पर ही लिया है अपनी बात कहने के लिए। आपको अच्छी लगे तो अपनाएं वरना जानें और आगे चलें।

अब जब हम अपने इस जमाने की बात कर रहे हें तो देखिये अंग्रेजी में राम का उल्टा MAR मार बनता है जोकि इस लेख का शीर्षक भी हैं यही मार हम पर भारी पड़ रही है। पिछले जमाने में बड़े-बूढ़े कहते थे कि मार के डर से भूत भी भाग जाते हैं। यानि जब मार पड़ती है (बच्चों पर या बड़ों पर) तो सब ठीक हो जाते हें पर समय की मार तो सब पर पड़ती ही है उससे आजतक कोई बचा नहीं है।

जब जब मार पड़ी भगतन पर।
राम नाम ने लिया भगतों का बेड़ा पार।।

इसी के सहारे हम भी उबर सकते हैं। कब और कैसे? जब हम इस MAR-RAM को अपना मंत्र बना लें। मतलब, इससे कुछ सीखें तभी यह हो पाएगा। मैं इसका विवेचना करता हूँ कृपया ध्यान दें—

M — METHODS = तरीके
A — ADOPTED = अपनाएं
R — REPEATEDLY = बारबार
R — ROBUST = पुष्ट, दृढ़ (तरीके)
A — ACCOUNTABILITY= जवाबदेही
M — MEANS = साधन

हम ऊपर दी हुई कुंजी के सहारे देखें तो हमें पता चलेगा कि हमारी कमजोरियों का क्या कारण है। हम यदि जो बार-बार करते आ रहे हैं उन तरीकों से मात खा चुके हैं और फिर वही तरीके बार-बार अपनाते जाएंगे तो वही नतीजा मिलता रहेगा जो अब तक मिला है। इस चाल को सीधी करें ओर पुष्ट-दृढ़ तरीके अपनाएं, जवाबदेही को महत्त्व दें व साधनों की पूर्णता की जाँच कर लें। काम शुरू करने से पहले तो यह किसी भी क्षेत्र में हमारी सफलता का महामंत्र बन जाएगा। दूसरी बड़ी समस्या है कि नियमों को मानना हमारे सम्मान को सबसे बड़ी चुनौती है। यह हमारे खून में नहीं बल्कि घुट्टी में पिलाया जाता है कि नियमों की अवहेलना करो। तो नियम जिस उद्देश्य से बने हैं वह कैसे पूरा होगा? उनकी उपयोगिता कैसे सार्थक होगी? उनमें विश्वास कैसे उपजेगा। आज हमारी सरकार के ज्यादातर नियम देश, काल और पात्र के प्रसंग में खरे नहीं उतर रहे हैं। परिणामस्वरूप व कारण स्वरूप (दोनों ही) साधन सीमित होते जा रहे हैं। समस्याएं बढ़ती जा रही हैं। जवाबदेही की कमी (अधिकारियों व नागरिकों में) व दृढ़ता एवं पुष्ता किसी क्षेत्र में है ही नहीं। आप अपने आप से यह प्रश्न करें और उपर्युक्त कसौटी पर खुद जाँच करने से यह कथन स्वयं सिद्ध हो जाएगा। जरूरत है ऐसे नियमों की जा हमारे साधनों व पहुंच के भीतर पालन करने योग्य हैं। जवाबदेही हर स्तर पर हो तभी हम उन नियमों की पुष्टि कर उनसे लाभ उठा पाएंगे वरना निरर्थक नियमों की मार इसी तरह हमारी मौलिकता, नैतिकता व उद्यमिताका हनन करती रहेगी। गलत नियमों की अवहेलना करने के बजाय उन्हें बदला जाये या मिटाया जाय यह कोशिश सबको करनी पड़ेगी। बाकी सभी नियमों का पालन करना होगा हम सबको—चाहे कोई छोटा हो या बड़ा, गरीब या अमीर, जनता या नेता, हिन्दू, मुसलमान, सिख या ईसाई हम सब हैं भाई-भाई और नियम सबके लिए एक समान होने चाहियें।

—रश्मि उमेश रोहतगी
24161 नीलन ड्राईव नौवी(मि०) सं०रा०अ० 48374-3754
248-471-5786 e-mail : rurohatgi@yahoo.com
website : www.rurohatgi.com